

९
धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

II-125

(14)

五

11911

विधि॥ गगनि निरगि निरगि विधि २ गंत वि २ गधंत वि २ गम वि २ ग
ह वि २ गह २ गह वि २ गग वि २ गह वि २ गहि २ गहि २ गम वि २ गय २ गह
२ गुय वि चय॥ मूचलः मूचलः॥ गुह नि २ गुय नि २ वूल २ वूल २ मू
चिल २ जय वि जय जय वनि॥ अयय निः सर्वतय विंगत॥ सर्वग
संचक नि॥ मि वि २ हि वि २ मि वि २ गि वि २ पि वि २ ससका क व धि

四

सर्वभृत्पुमपतिः जकु रमां सर्वहलां च सर्वस्य सः सर्वपदवत्सः
सर्वधाधितः चिनि रविनि रविनि रविगगावज्जलविष्णुधनिः विवि
धावननविनाथनिः मूचि रमूचि रचिनि रविलि रकिलि रमिलि र
कमले विमल ॥ जयविजय ॥ जया वह ॥ जयवति ॥ किष्णवतिः स
जवति ॥ नलनकूटमालाधवि ॥ वक्रविविधविचित्रवहाधाविधि ॥ स

1211

[illegible]

३

चिनि २ विनि २ समना वला कि न पुन २ सप्रहसुपुह वि ठुङ् ॥ सर्व पाप वि
हम धनि धू २ धज नि धज ॥ धज २ सससससससससससस ॥ ५ ॥ ससससस
चल ॥ चाल ससर्व इष्टान् पूजयन्ता ॥ मङ्गु गि नि ॥ श्री व पु ध यः जय क
मल ॥ कि नि २ व ज दां कृ णीः ॐ पद्म वि ठुङ् ॥ ध य २ ठुङ् २ रुज २ ति नि २
पु २ र म ग ल वि ठुङ् ॥ प वि ठु म् रि वि ॥ र व ङ्गी नि २ र व ज २ ठा लि त ठि म्

॥ ३ ॥

ग ॥ समना वला कि न पुन वि ठुङ् ॥ समन पु सा जि ना व ता धि त वि ठुङ् ॥ का
ल २ सर्व देव ग ण समा क र्ष णि ॥ सत्य पु न ॥ ॐ कीं तुं त ज २ ना ज य मां त ग व ति
सर्व सत्वां ष चः नाग वि ला कि नः लघू २ लरु २ इ लू २ रु २ रु २ रु २ कि नि
२ कि नि २ रु नि २ सर्व ग ह त रु नि ॥ पिं ग ली २ म् चू म् चू म् चू म् चू म् चू ॥ ४ ॥
सम २ स वि व य ॥ त ज २ ना ग वि ला कि नि ॥ ना ज य मां सर्व सत्वां ष चं

३

सागार्ह्यकान् ॥ तगवति अमृमहादा जूहयत्य ॥ सर्वत्र समन्त न ॥ दि
 ठमबंधन ॥ वज्रपाठबंधन ॥ वज्रकालिनि ॥ वज्रकालाविठुङ्क ॥ सु
 विरराज २ हिति २ सुज २ तगवति गर्तवति ॥ गर्तविठुङ्क ॥ गर्तविठुङ्क
 धनिः कुक्ति संपूर्णनि ॥ जकुहि ॥ कल २ चल २ उँ कालिनि ॥ वर्वमुदव
 समं मन दिव्यादकन ॥ अमृतवर्षाणि ॥ देवावनाजनि ॥ अतिपिंचंतुमं

॥ ४ ॥

सूगवज्रवचनामृतवपुस्कपठ २ मां सर्वसत्त्वां ॥ सर्वत्र सर्वदाः
 सर्वत्रयत्य ॥ सर्वोपद्रवत्य ॥ सर्वोपसर्जत्य ॥ सर्वव्याधित्य ॥ सर्वद्रव्य
 रायतीमत्यः सर्वकलिकलहविगुविवादसर्वत्रयविठुङ्कधनि ॥ इः स्वप्न
 इतिमिक्तासंगलयापविठुङ्कधनि ॥ कुक्ति संपूर्णनि ॥ सर्वयकजाकु
 सनागविदाजीति ॥ वस २ वसवनिः जय २ विजय २ जयतु सर्वत्र सर्व

कालं सिद्धिं शुभः ॐ यमाहाविद्या साधय मंत्रलं द्यागय विद्या नृजय
२ सिद्ध २ वृद्ध २ पूजति पूजं २ भू आ ॐ विद्या जय मूर्त्ति ॥ जया कृति
यकति ॥ जय वति ॥ निक २ रग वति समय मन पा लय ॥ सर्व न धाग
त हृदय विष्णु ॥ व्यवसाय मां सर्व सत्वां ॐ सर्वा ॐ पति पूजय ॥ सर्व
सत्त्वाना च ग्राय स्वमा मष्ट महादा नृणा तय ॥ स न २ प्र स न २ सर्वा

॥ ५ ॥

वज्र विष्णु मधनि ॥ समंतां काच मंत्र ल विष्णु ॥ विग न २ विग न मल ॥ सर्व म
ल विष्णु मधनि ॥ सर्व मंगल विष्णु मधनि ॥ सर्व मल विष्णु ॥ सर्व मंगल विष्णु
॥ सर्व मंगल विष्णु मधनि ॥ किं हि २ सर्व पाप विष्णु ॥ मल विग न ॥ जय
वति ॥ मजा वति ॥ वज्र वति ॥ वज्र वज्र वति ॥ उं ग्रे ला का धि वि ग स्वाहा ॥ सर्व
तथागत मूर्त्ति विष्णु स्वाहा ॥ सर्व वृद्ध वाधि सत्वाति विष्णु स्वाहा ॥ सर्व

वनातिष्ठिकं स्वाहा॥ सर्वगथागतहृदयविष्णुस्वहा॥ सर्वगथागतहृ
दयाधिष्ठितहृदयस्वाहा॥ सर्वगथागतसमयसिद्धं ॐ नमो ॐ नमो ॐ नमो ॐ
नमो ब्रह्माकिर्तनस्वाहा॥ बुद्धीबुद्ध्याध्वुषितस्वाहा॥ सर्वगथागताधिष्ठित
स्वाहा॥ विष्णुनमस्कृतं स्वाहा॥ महेश्वरवंदिताय स्वाहाः वज्रध
रवज्रपाशिवलविद्याधिष्ठितस्वाहा॥ धर्मराक्षाय स्वाहा॥ विष्णुका

य स्वाहा ॥ विष्णु काय स्वाहा ॥ वैश्व देव काय स्वाहा ॥ चतुर्भुजा जन्म
स्व काय स्वाहा ॥ यमाय स्वाहा ॥ यम पूजित नमस्व काय स्वाहा ॥ वरुण
य स्वाहा ॥ वानरुणाय स्वाहा ॥ मातृकाय स्वाहा ॥ महा मातृकाय स्वाहा
आग्नेय स्वाहा ॥ वायवे स्वाहा ॥ नाग विलोकि काय स्वाहा ॥ देव गहात्य
स्वाहा ॥ नाग गहात्य स्वाहा ॥ यक्ष गहात्य स्वाहा ॥ राक्षस गहात्य स्वाहा ॥

मु

गंधर्वगुह्यस्वाहा ॥ अमृतागुह्यस्वाहा ॥ अमृतगुह्यस्वाहा ॥
गङ्गागुह्यस्वाहा ॥ किन्नेत्रगुह्यस्वाहा ॥ महोन्नतगुह्यस्वाहा ॥
मनूष्यगुह्यस्वाहा ॥ अमनूष्यगुह्यस्वाहा ॥ सर्वेश्वरस्वाहा ॥
सर्वनेत्रस्वाहा ॥ सर्वदेवस्वाहा ॥ सर्वप्रभस्वाहा ॥ यम
म अहिर्बोधिषास्रपां सर्वेषां योनः कालय २ सर्वद्रव्यविज्ञानं

॥७॥

स्वाहा ॥ कालिनायस्वाहा ॥ प्रकालिनायस्वाहा ॥ दिक्कालाय ॥
वज्रकालायस्वाहा ॥ हसनकालायस्वाहा ॥ मानिरुद्रायस्वा
हा ॥ पूरुषेन्द्रायस्वाहा ॥ समन्तरुद्रायस्वाहा ॥ महासमन्तरुद्रायस्वाहा ॥
कालायस्वाहा ॥ महाकालायस्वाहा ॥ मातृगणायस्वाहा ॥ यक्षिणीनां
स्वाहा ॥ जाकुसीनां स्वाहा ॥ पुनर्विष्णुवज्रकिनीनां स्वाहा ॥ आका

५

षा मा तृनां स्वाहा ॥ स मूड गम मिनीनां स्वाहा ॥ स र्धे स मूड वा सिनीनां
 स्वाहा ॥ या त्रि च जानां स्वाहा ॥ दिवा च जानां स्वाहा ॥ त्रिसंध्या च जानां
 स्वाहा ॥ वैला च जानां स्वाहा ॥ अर्धैला च जानां स्वाहा ॥ गर्ह हर्षे च
 स्वाहा ॥ गर्ह ध्वज स्व स्वाहा ॥ गर्ह हा वि श्व स्व स्वाहा ॥ गर्ह हं ध्वज धी च
 स्वाहा ॥ धू नू २ स्वाहा ॥ हु लू २ स्वाहा ॥ मू नू २ स्वाहा ॥ उं स्वाहा ॥ कूं स्वाहा

खं स्वाहा ॥ युः स्वाहा ॥ श्व वः स्वाहा ॥ शु र्जु वे स्वाहा ॥ चि त्री २ स्वाहा ॥ वि दि
 २ स्वाहा ॥ ध ज धि स्वाहा ॥ धा ज धी स्वाहा ॥ अग्नि स्वाहा ॥ ग ऊ वा य स्व
 हा ॥ चिलि २ स्वाहा ॥ सिलि २ स्वाहा ॥ मिलि २ स्वाहा ॥ वू ध्य २ स्वाहा ॥ मं
 उल वं ध्र स्वाहा ॥ सि मा व ध्र स्वाहा ॥ सर्व षा कुं हं गे य २ स्वाहा ॥ जं र य २
 स्वाहा ॥ हं र य २ स्वाहा ॥ किं द य २ स्वाहा ॥ सिं द य २ स्वाहा ॥ हं न २

७

स्वाहा ॥ वंध्य स्वाहा ॥ मोहय २ स्वाहा ॥ महि विठुं स्वाहा ॥ सूर्य सूर्य
विठुं स्वाहा ॥ धनि स्वाहा ॥ विधनि स्वाहा ॥ चन्द्र २ दूर्य चंद्र
स्वाहा ॥ ग्रह स्वस्वाहा ॥ न कुं स्वस्वाहा ॥ निवेश स्वाहा ॥ पिष्ट चं
स्वाहा ॥ विष्ट स्वस्वाहा ॥ धं ति स्वस्वाहा ॥ दूक्षि स्वस्वाहा ॥ स्वस्वयं
स्वस्वाहा ॥ गगर्ह धधय स्वस्वाहा ॥ धिं वं क प्रि धं क प्रिः धं मि क प्रि

॥२॥

पूष्कि क प्रि वल वर्धनि स्वाहाः धी क प्रि स्वाहाः धी वर्धनि स्वाहाः वल वर्धनि
क प्रि ॥ धी हालिनि स्वाहा ॥ मूचि स्वाहा ॥ न मूचि स्वाहा ॥ म मूचि स्वाहा
वगवति स्वाहा ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॐ सर्वथा गग मूर्ध प्रवय विग न तय सम यस्वं
भरुगवति सर्वपाय स्वस्ति र्वं तु सम सर्व सत्त्वा नां च स्वाहा ॥ ॐ मूनि २ वि
मूनि २ ध वि २ च वि २ चलने राशव नि तय विग न ॥ सय सज हि ॥ वा वि २ वा

